# दिल में है अमेरिका

ईबू पटेल

ईबू पटेल

साभार: ईबू पटेल

मुझे अमेरिका प्रिय है और ऐसा इसलिए नहीं है कि मुझे इसके आदर्श होने को लेकर कोई भ्रम है। भारत से आए एक मुस्लिम आप्रवासी की संतान यानी मुझे यह इसलिए प्यारा है कि यह अपनी प्रगति में भागीदारी, इसके उत्तरोतर विकास में अपने लिए जगह और मौजूद संभावनाओं में अपनी भूमिका अदा करने का अवसर देता है।

अमेरिका में बसे शुरुआती यूरोपीय लोगों में से एक जॉन विनथ्रोप ने अमेरिका की इसी खूबी के बारे में अपने विचार जताए थे। उन्होंने अपने साथ रहे लोगों से कहा कि उनका समाज पहाड़ी पर बसे एक ऐसे शहर की तरह होगा जो दुनिया को रोशनी दिखाएगा। ईसाई धर्म मानने वाले विनथ्रोप में यह उम्मीद गहरे तक बसी हुई थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने पहाड़ी पर बसे अपने शहर की जो कल्पना की, उसके बीचोंबीच चर्च भी था। शताब्दियों से अमेरिका एक धार्मिक राष्ट्र रहा है लेकिन साथ ही यह बहु धार्मिक स्वरूप भी लेता रहा है। वास्तव में यह ऐसा देश है जो पश्चिमी देशों में सबसे ज़्यादा धार्मिक है और पूरी दुनिया में सर्वाधिक धार्मिक विविधता वाला राष्ट्र है। पहाड़ी पर बने शहर में चर्च की परिकल्पना अब मस्जिदों, यहूदी धर्मस्थलों, बौद्ध धर्मस्थलों और हिंदुओं के मंदिरों से घिरी हुई है। हकीकत यह है कि अमेरिका में आज अमेरिका की स्थापना करने वाले लोगों द्वारा शुरू किए गए धर्म को मानने वाले एपिस्कॉपेलियन्स लोगों की तुलना में मुस्लिमों की संख्या ज़्यादा है जो बताता है कि किस तरह अमेरिका में अलग-अलग मत मानने वाले लोगों का स्वागत हुआ है।

आज से सौ साल पहले महान अफ्रीकी अमेरिकी विद्वान डब्ल्यू. ई. बी. डुबोइस ने चेताया था कि उस शताब्दी की मुख्य समस्या वर्ण से संबंधित होगी। आज की स्थिति को देखें तो इक्कीसवीं शताब्दी की समस्या धर्म को लेकर रह सकती है। उत्तरी आयरलैंड से लेकर दक्षिण एशिया तक और मध्य पूर्व से लेकर मध्य अमेरिका तक लोग ईश्वर के नाम पर निंदा कार्यों में जुटे हैं, एक-दूसरे पर बल प्रयोग कर रहे हैं, और हत्याएं करने में जुटे हैं। मेरे देश (अमेरिका), मेरे धर्म (इस्लाम) और ईश्वर को मानने वाले सभी लोगों के सामने दुनिया की आज की परिस्थितियों में सबसे महत्वपूर्ण सवाल ये हो सकते हैं: स्वर्ग को लेकर अलग-अलग अवधारणाएं रखने वाले विभिन्न लोग इस पृथ्वी पर एक-दूसरे के साथ किस तरह रहें? क्या किसी नए शहर में अब चर्च, मस्जिद, यहूदी धर्मस्थल, मंदिर और बौद्ध धर्मस्थल एक साथ रह सकते हैं।

मेरे विचार से श्रद्धा और सद्भाव की अमेरिकी परंपरा इसमें विशेष योगदान कर सकती है। अमेरिका ऐसी जगह है जहां अलग-अलग जगह से लोग आकर यहां एकत्र हुए हैं। यहां की खूबी यह है कि इन सभी को अमेरिकी परंपरा में कुछ योगदान करने और अमेरिकी संगीत में कुछ नए सुर जोड़ने का अवसर मिलता है।

मैं ऐसा अमेरिकी हूं जिसकी आत्मा मुस्लिम है। इस आत्मा के साथ साहसिक घटनाओं, आंदोलनों और सभ्यताओं का इतिहास है जो ईश्वर की इच्छा के आगे नतमस्तक है। जब पैगंबर मोहम्मद ने इस्लाम का मुख्य संदेश दिया तो मेरी आत्मा ने उसे सुना। मध्यकाल में मेरी आत्मा पूर्व और पश्चिम तक पहुंची- मस्जिदों में नमाज अदा की और मध्यकाल के मिस्र और बगदाद जैसे महान मुस्लिम शहरों के पुस्तकालयों में अध्ययन किया। मेरी आत्मा को रूमी ने स्पंदित किया, अरस्तू को पढ़ा, नासिर खुसरो के साथ मध्य एशिया की यात्रा की। औपनिवेशिक दौर में मेरी आत्मा को न्याय ने झकझोरा और उसने अब्दुल गफ़्फ़ार खान और खुदाई खिदमतगारों के साथ भारत की आज़ादी के लिए सत्याग्रह किया और बहुसांस्कृतिक दक्षिण अफ्रीका के लिए संघर्ष कर रहे लोगों का भी साथ दिया।

मेरी एक आंख में बहु धार्मिकता और बहु सांस्कृतिकता की प्राचीन मुस्लिम दृष्टि है, तो दूसरी आंख में अमेरिकी सपना है। मेरे दिल में यही सपना है कि हम वाकई उस तरह का शहर बना पाएं जिसमें विभिन्न धार्मिक समुदायों के लोग आदर के साथ एक-दूसरे के साथ रह सकें और मिलकर एकसाथ दुनिया को राष्ट्रों को ऐसा समूह बना दें जहां लोग एक-दूसरे को भाईचारे और नेक भावना के साथ देखें। एक ऐसी शताब्दी हो जिसमें हम साथ-साथ जीवन का आनंद उठा पाएं।

जेम्स केम्प/ब्लैक स्टार

*कैलिफ़ोर्निया में एक मुस्लिम अमेरिकी परिवार।*

*ईबू पटेल शिकागो, इलिनॉय में इंटरफेथ यूथ कोर के कार्यकारी निदेशक हैं।*